would be posted out to some other army units, depending on the vacancies. As per the existing rules they would be posted in the lower grade; for instance, Office Superintendent and U.D.C. as L.D.C.; Driver Grade I as Grade II and Stenographer Grade I and II as Grade III, etc. They would also lose their seniority in the new units with the result that their further increments would be stopped in the new units due to this downgrading. We have also to take into account the problem of education of the children of these employees if the Academy is shifted to North India. In Madras, Tamil is the medium of instruction whereas in U.P., Hindi is the medium of instruction.

Therefore, through you, Sir, I would request the Defence Ministry to intervene immediately in this matter and stop forthwith this sinister move to merge the Officers' Training Academy, Madras, with the Indian Military Academy, Dehradun. Thank you very much.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन, यह समस्या आज की नहीं है, पुरानी है। पूना में भी इसी प्रकार का एक कालेज था जिसको कि कई साल पहले इंडियन मिलेट्री एकाडमी में मर्ज कर दिया गया। अब सरकार की नीति क्या है, क्योंकि इन कालेजों के भीतर सीधे रिक्रूट न करके जो सिपाही आदि थे, उनकी भर्ती करके एफिसिएंट आफिसर बनाना था। तो मैं कहना चाहता हूं कि सरकार नीति तय करे और हमको बताए कि उसकी क्या नीति है और क्यों मर्ज कर रहे हैं? दूसरे, मेरा अनुभव है कि जब पूना का कालेज मर्ज किया गया तो स्टाफ का जो सैलेरी वगैरह का मर्जर था, वह कठिन हुआ। क्योंकि लाइब्रेरियन का मुझे मालूम है, जो यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन को देना चाहिए, वह होते हुए नहीं दिया गया। कम से कम इस प्रकार की एनॉमली अब बन्द होनी चाहिए यदि वह मर्ज करने के लिए उतारू है।

Misuse of Telephones of Members of Parliament

श्री राम देव भंडारी (बिहार) : महोदय, मैं इस विशेष उल्लेख के माध्यम से संसद सदस्यों के टैलीफोन के दुरुपयोग के संबंध में सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं।

महोदय, 27 जुलाई, 1993 को इसी सदन में संचार विभाग पर सवाल और जवाब का क्रम चल रहा था और माननीय सदस्यों ने शिकायत की थी कि उन के टैलीफोनों का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग किया जा रहा है और स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि उन के टेलीफोन से रूस में काल किया गया है जब कि उन्होंने कोई टेलीफोन नहीं किया है।

महोदय, मैंने अपने टैलीफोन बिलों को देखा तो मार्च में 24257 काल किये गये और उसके अगले महीने अप्रैल में 31656 काल किये गये। मई में मैंने मंत्री जी को पत्र लिखा कि इस संबंध में विस्तृत जांच कराई जाए। मंत्री जी ने दो तीन महीने बाद अगस्त में जवाब दिया कि उन्होंने टैलीफोन डिपार्टमेंट से इस की जांच कराई है और आपके टैलीफोन का कोई दुरुपयोग नहीं किया गया है। उन्होंने लिखा कि इस बात की संभावना है कि आप के घरेलू नौकर और परिवार के सदस्यों द्वारा इस का दुरुपयोग किया गया हो। मैं आप को बताना चाहता हूं कि मैं 24, साउथ एवन्यू में अकेले रहता हूं, टैलीफोन मेरे कमरे में रहता है। टैलीफोन का उपयोग मेरे सिवाय कोई नहीं करता है। सबसे बड़ी बात यह है कि यह जो टैलीफोन का दुरुपयोग किया गया है यह 12 बजे रात से सुबह 4, 5 और 6 बजे के बीच में अधिक किया गया है। 12 बजे से 6 बजे तक मैं सोया रहता हूं। मैं अपने टैलीफोन का स्वयं दुरुपयोग कैसे कर सकता हूं।

श्रीमन, मेरे टैलीफोन से जहां-जहां टैलीफोन किया गया है, वह मैं आपको बताना चाहता हूं। मेरे टैलीफोन से हांगकांग, मैक्सिको, अर्जेन्टीना आदि विदेशों में टैलीफोन किये गये हैं। मैंने बहुत पता लगाने का प्रयास किया लेकिन मुझे कोई जानकारी नहीं मिली। मैंने पुनः मंत्री जी को पत्र लिखा कि 12 से 6 बजे तक

मेरे यहां से किसी ने टैलीफोन नहीं किया है, कृपया इसकी विस्तृत जांच करायें जिससे इसका पता लग सके। उसके बाद मंत्री जी ने कोई जवाब नहीं दिया। मंत्री जी मेरे पत्र के जवाब के बारे में सो रहे हैं। इसलिये मैं आपके माध्यम से चाहता हूं कि इस तरह से जो संसद सदस्यों के टैलीफोन का दुरुपयोग होता है उसकी जांच सी.बी.आई. से कराई जाय। इसके बाद ही इसका पता लग सकता है या हाउस की कोई कमेटी बनाई जाय जिसके माध्यम से पूरी जांच कराई जाय। 50 हजार निःशुल्क काल जो एम.पी. को मिलते हैं और एक ही महीना में 30–40 हजार होगी तो वह जल्दी खत्म हो जायेंगी और बाकी का बिल भरने के लिए पता नहीं संसद सदस्यों को क्या-क्या करना पड़ेगा ?

SHRI JIBON ROY (West Bengal) : Sir, this is a very serious matter. I associate myself with this.

SHRI SARADA MOHANTY (Orissa) : I also associate with this.

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI (Gujarat) : Sir, we as MPs can use this forum but what about the ordinary citizens ? They cannot even go to the General Managers or the telephone authorities. I can tell you from my personal experience that there is a rampan corruption going on and if we do not do anything, it is the ordinary tax-payer who has to suffer. I do not think the Government is taking it seriously.

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal) : It is happening with various telephones. Various honest telephone subscribers are suffering on that score. This is an example of an MP having been cheated, but there are so many ordinary people who are being cheated. So, the Minister should take it up very seriously and should not sleep over it.

SHRI H. HANUMANTHAPPA (Karnataka) : We have been demanding that the Government should provide meters like electricity and power meters so that we could ourselves look into it, but I do not know why the Department is hesitating. When a private telephone subscriber complaints, he is asked to pay the bill first and then the matter would be looked into. That is the rule, they say, and afterwards the reply comes that the bill has been looked into and found correct. This is how an ordinary subscriber is taxed. So, the Department should come forward to instal meters for every telephone so that we ourselves are able to know the reading.

श्री शांति त्यागी (उत्तर प्रदेश) : मंत्री जी तमाम बिलों को माफ करवा दीजिए। . . .

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : आप निर्देश दीजिए टैलीफोन विभाग को।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY) : There are serious complaints raised....

SHRI RAM JETHMALANI (Karnataka) : Sir, I want to share an experience with this House. About two years ago, London's Economist published, in one of its issues, the photograph of a man sitting in Delhi with a small wooden table and a chair under an open tree, and for Rs. 100 anybody could go to his table and make a call to any part of the world, whatever be the duration. Now, I took out that picture and sent it to the Minister concerned. I have not yet heard for the last two years. This shows that the scandal is so prominent that even foreign newspapers take notice of it but there is complete darkness here with the Minister concerned. Something has got to be done. This is the biggest scandal going on.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY) : Hon. Members have expressed their concern about misuse of telephones and inflated telephone bills. I think the hon. Minister for Telecommunications will look into the matter and rectify it.

श्री शांति त्यागी : सर, बिल माफ करवाइए।

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI : We want them to react, Sir. They only keep on looking at it; they don't react.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARYANASAMY) : The Telecommunications Minister is not here. Now, Shri Austin. ....Not here. Shri Ram Naresh Yadav.

SITUATION IN BANARAS HINDU UNIVERSITY

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन और सरकार का ध्यान बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में व्याप्त अव्यवस्था, अकर्मण्यता, आतिशजनी, पत्थरबाजी और पुलिस द्वारा लाठीचार्ज की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। महामना मदन मोहन मालवीय के स्वप्नों का मूर्त रूप काशी हिंदू विश्वविद्यालय था। उन्होंने भारत की महान सांस्कृतिक नगरी काशी में पुण्यसलिला गंगा के तट पर इस विश्वविद्यालय की स्थापना का व्रत लिया था। इसका शिलान्यास राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कर-कमलों द्वारा काशी नरेश तथा अन्य लोगों की उपस्थिति में किया गया था। आज वह एक विश्व-विख्यात विश्वविद्यालय है और एशिया का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। यह केवल विश्वविद्यालय ही नहीं है बल्कि विद्या की राजधानी है। मालवीय जी ने जो स्वप्न देखा था, उसके आधार पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलगीत का शीर्षक भी रचा गया था और वह है--स्वविद्या की राजधानी। इसी रूप में महामना मालवीय जी ने जो संकल्पना की थी, वह पूरी हुई किंतु आज ऐसा लग रहा है कि इस विश्वविद्यालय को कोई देखने वाला नहीं है। अभी पिछले दिनों जिस तरह से विश्वविद्यालय में घटना घटी है वह बहुत ही दुःखद और चिंतनीय है और आज भी पूरा विश्वविद्यालय परिसर अशांत बना हुआ है और जब विश्वविद्यालय अशांत बना रहेगा तो वहां पर जो आग की लपटें निकली हैं, धुंआ निकला है, उससे विश्वविद्यालय की गरिमा पर आघात पहुंचा है और उसकी गरिमा धूल-धूसरित हुई है।

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि वहां पर वाईस-चांसलर 6 महीने से नहीं हैं। त्यागपत्र देकर बैठ गए हैं और त्यागपत्र स्वीकार हो गया है लेकिन अभी किसी की नियुक्ति नहीं हुई है। साथ ही साथ रैक्टर भी नहीं थे लेकिन अभी परसों दो दिन पहले रैक्टर की नियुक्ति हो गई है। प्रॉक्टर भी नहीं है, अस्पताल का कोई अधीक्षक नहीं है, छात्रकल्याण का डीन नहीं है, कोई रजिस्ट्रार नहीं है, कोई पुस्तकालयाध्यक्ष नहीं है। इसीलिए मैंने कहा कि मालवीय जी का जो स्वप्न था, वह धूसरित हो रहा है। आज जिस तरह से वाईस-चांसलर के न होने की वजह से सारा परिसर अशांत हो गया है, वह केवल वाराणसी के लिए चिंताजनक नहीं है बल्कि पूरे पूर्वांचल और पूरे हिंदुस्तान के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। अपने देश की बात तो छोड़ दीजिए, यहां तो बाहर से भी लड़के पढ़ने के लिए आते हैं।

महोदय, पूरे देश की प्रगति के लिये विशेषज्ञों की सबसे पहली किस्त इसी विश्वविद्यालय ने दी थी। इसलिये इस चीज को ध्यान में रखते हुए जो चारों ओर अशांति का वातावरण दिखाई पड़ रहा है, मेरी आपके द्वारा सरकार से मांग है कि जल्दी से जल्दी इस ओर ध्यान दिया जाये क्योंकि अगर कोई प्रशासक नहीं है, कुलपति नहीं है तो व्यवस्था कैसे होगी? कौन नियंत्रण करने वाला होगा? सारी चीजें अनियंत्रित रहेंगी। इसलिये मदन मोहन मालवीय जी ने जिस पुनीत भावना से इस विश्वविद्यालय की संकल्पना की थी, उसको ध्यान में रखते हुए मेरी सरकार से मांग है कि तत्काल ऐसे कदम उठाए ताकि विश्वविद्यालय का परिसर अशांत न रहे और प्रशासन व्यवस्था ठीक ढंग से चल सके। महोदय, वहां का ढाई अरब रुपये का बजट है, उसे कौन देखेगा? इसलिये छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए, उस विश्वविद्यालय की गरिमा को ध्यान में रखते हुए जिसकी नींव राष्ट्रपिता बापू ने डाली थी, मदन मोहन मालवीय जी के स्वप्न को साकार करने की दिशा में जो प्रयास हुआ, उसको धूमिल न किया जाये।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए सरकार को चाहिये कि जल्दी से जल्दी कदम उठाये। मेरा आपके माध्यम से आग्रह होगा कि आप सरकार को निर्देश दें कि इस विश्वविद्यालय के अशांत